29 **सितंबर** 2024

पिन्तेकुस्त के बाद 19**वां रविवार**

स्वर्ग की सारी सेनाओं के साथ मिलकर परमेश्वर की स्तुति करना

दूसरा राजा अध्याय **6** वचन **8** से लेकर **17** तक
भजन संहिता अध्याय **103** वचन **17** से लेकर **22** तक
प्रकाशितवाक्य अध्याय **12** वचन **7** से लेकर **12** तक
मत्ती अध्याय **18** वचन **1** से लकर **6** और **10**

बाइबल में स्तुति एक केंद्रीय विषय है और यह हमारे आत्मिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रखता है। यह मात्र आराधना का काम नहीं है, बल्कि परमेश्वर की महानता, भलाई और महिमा के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करना है। पिन्तेकुस्त के बाद इस **19**वें रविवार को, हमें "स्वर्ग की सारी सेनाओं के साथ मिलकर परमेश्वर की स्तुति" विषय पर मनन करने के लिए बुलाहट दी गई है। यह विषय हमें सर्वशक्तिमान की आराधना में स्वर्गीय प्राणियों के साथ शामिल होने के लिए यह पहचानते हुए आमंत्रित करता है कि हमारी स्तुति एक वैभवशाली, शाश्वत गान का हिस्सा है, जो पूरे जगत में गूंजता रहता है। आज के लिए ठहराए गए पवित्रशास्त्र के पाठ - दूसरा राजा अध्याय **6** वचन **8** से लेकर **17** तक, भजन संहिता अध्याय 103 वचन 17 से लेकर 22 तक, प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 वचन 7 से लेकर 12 तक, और मत्ती अध्याय 18 वचन 1 से लकर 6 और 10 – हमें स्तुति के स्वभाव, आराधना में स्वर्गदूतों की भूमिका और विश्वास के महत्व के बारे में गहरा गूढ़ ज्ञान प्रदान करते हैं। जब हम इन अनुच्छेदों पर मनन करेंगे, तो हम स्तुति के संबंध में ईश-विज्ञान, स्वर्ग की सेनाओं के साथ अपनी धुन को मिलाने के महत्व पर और कैसे विश्वास हमारी स्तुति के साथ जुड़ा हुआ है, पर गहराई से विचार करेंगे।

पहला विचार. **आत्मिक युद्ध में स्तुति की सामर्थ्य (दूसरा राजा अध्याय** 6 **वचन** 8 **से लेकर** 17 **तक**) दूसरा राजा अध्याय **6** वचन **8** से लेकर **17** में एलीशा और उसके टहलुए की कहानी हमारे चारों ओर मौजूद अदृश्य आत्मिक वास्तविकताओं का एक शक्तिशाली चित्रण देती है। जब टहलुए ने नगर को घेर हुए अराम की सेना को देखा, तो वह घबरा गया। लेकिन एलीशा ने प्रार्थना की, "हे यहोवा, इसकी आँखें खोल दे कि यह देख सके।" यहोवा परमेश्वर ने उसके सेवक की आँखें खोलीं, और उसने एलीशा के चारों ओर के पहाड़ को अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ देखा। यह अनुच्छेद हमें याद दिलाता है कि हम कभी अकेले नहीं होते। जिस तरह एलीशा और उसका सेवक स्वर्गीय सेनाओं से घिरे हुए थे, ठीक उसी तरह हम भी परमेश्वर की स्वर्गदूतों की सेना से घिरे हुए हैं। हमारी स्तुति केवल हमारी शारीरिक आँखों से जो हम देखते हैं, उसके प्रति प्रतिक्रिया नहीं होती है, बल्कि परमेश्वर के राज्य की अदृश्य वास्तविकताओं में विश्वास की घोषणा होती है। जब हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तो हम अपने आप को उसके उद्देश्यों के साथ जोड़ते हैं और अपनी परिस्थितियों में उसकी उपस्थिति और सामर्थ्य को आमंत्रित करते हैं।

आत्मिक युद्ध के बीच में परमेश्वर की स्तुति करने का ईश-विज्ञान इस समझ में निहित है कि हमारा मल्लयुद्ध मांस और लहू के विरुद्ध नहीं है, बल्कि आकाश में पाए जाने वाली दुष्टता की आत्मिक सेनाओं के विरुद्ध है (इफिसियों अध्याय **6** वचन **12**)। स्तुति एक ऐसा हथियार है, जो दुश्मन को भ्रमित करता है और जीत दिलाता है। जब हम

परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तो हम अपने जीवन और परिस्थितियों पर उसकी प्रभुता की घोषणा करते हैं, और हम उसकी सर्वोच्चता को स्वीकार करने में स्वर्ग की सेनाओं में शामिल होते हैं।

दूसरा विचार. **स्तुति का शाश्वत स्वभाव (भजन संहिता अध्याय 103 वचन 17 से लेकर 22 तक**) भजन अध्याय **103** स्तुति का एक सुंदर गीत है, जो परमेश्वर के प्रेम के शाश्वत स्वभाव और उसके भय मानने वालों के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता का गुणगान करता है। आयतें **17** से लेकर **22** सृष्टि के सभी लोगों से यहोवा परमेश्वर की स्तुति करने की बुलाहट देते हैं, चाहे फिर वे स्वर्गदूत ही क्यों न हों, जो उसके प्रभुत्व के हर स्थान पर उसके सभी कार्यों को पूरा करने के लिए उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। यह भजन हमें याद दिलाता है कि स्तुति हमारे सांसारिक अस्तित्व तक सीमित नहीं है; वरन् यह एक शाश्वत कार्य है, जो समय और स्थान से परे है। स्वर्ग में स्वर्गदूत लगातार परमेश्वर की स्तुति करते हैं, क्योंकि वे लगातार उसकी उपस्थिति में रहते हैं, उसकी महिमा को देखते हैं। जब हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तो हम इस शाश्वत गान में शामिल होते हैं, एक ऐसे ईश्वरीय कार्य में भाग लेते हैं, जिसका कोई अंत नहीं है। परमेश्वर की स्तुति करने का महत्व इस मान्यता में निहित है कि यह हमारी सर्वोच्च बुलाहट है और वह उद्देश्य है, जिसके लिए हमें रचा गया था। स्तुति केवल कुछ ऐसा नहीं है, जिसे हम करते हैं; यह वह है, जो हम परमेश्वर के लोग हैं। जब हम उसकी स्तुति करते हैं, तो हम अपनी नियति को पूरा करते हैं और जीवन की पूर्णता का अनुभव करते हैं, जो उसकी उपस्थिति में होने से आती है।

सुरों के मिलान के साथ एक गान को गाने वाले ऑर्केस्ट्रा की कल्पना करें, जिसमें हर वाद्य यंत्र अपनी भूमिका को पूर्ण मिलान करता हुआ एक साथ बजता है। प्रत्येक स्वर एक सुंदर, एकीकृत ध्वनि में योगदान देता है, जो कि निजी वाद्य यंत्रों से परे है। ठीक उसी तरह से, जब हमारी स्तुति स्वर्गदूतों और सभी प्राणियों की स्तुति के साथ जुड़ती है, तो एक सुर वाला गान बनती है, जो परमेश्वर की महिमा करती है। हमारी व्यक्तिगत् आवाज़ें छोटी लग सकती हैं, लेकिन जब स्वर्ग की सेना के साथ मिलती हैं, तो वे एक वैभवशाली, शाश्वत गान का हिस्सा बन जाती हैं।

तीसरा विचार. **संसार में होने वाले बड़े युद्ध में स्तुति की विजय (प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 वचन 7 से लेकर 12 तक**) प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 वचन 7 से लेकर 12 तक हमें भलाई और बुराई के बीच होने वाले बड़े युद्ध की एक झलक देता है। प्रधान दूत मीकाईल और उसके स्वर्गदूतों ने शैतान का प्रतिनिधित्व करने वाले अजगर और उसके स्वर्गदूतों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। अजगर को पराजित किया गया और उसे पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और स्वर्ग में ऊँची आवाज़ में जीत की घोषणा की गई, जिसमें बताया गया कि, "अब हमारे परमेश्वर का उद्धार और सामर्थ्य और राज्य और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है।" यह अनुच्छेद स्तुति और जीत के बीच संबंध को प्रकट करता है। स्वर्गीय प्राणी परमेश्वर की स्तुति करते हैं, क्योंकि उन्होंने बुराई पर उसकी विजय देखी है। उनकी स्तुति मात्र जीत की प्रतिक्रिया नहीं है; यह परमेश्वर की सामर्थ्य और उसके राज्य की स्थापना की घोषणा है। जब हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तो हम इस जीत में भाग लेते हैं, उसके अंतिम अधिकार और उसके शासन की निश्चितता में अपने विश्वास की पुष्टि करते हैं। प्रकाशितवाक्य अध्याय **12** में स्वर्गदूतों की स्तुति एक अनुस्मारक के रूप में भी काम करती है कि पृथ्वी पर हमारे संघर्ष एक बड़ी आत्मिक लड़ाई का हिस्सा हैं। हमारी स्तुति का लौकिक महत्व है, क्योंकि यह हमें परमेश्वर के विजयी उद्देश्यों के साथ जोड़ती है और हमें अपने विश्वास में दृढ़ रहने के लिए मजबूत बनाती है।

चौथा विचार. **छोटे बच्चों की विनम्रता और विश्वास (मत्ती अध्याय 18 वचन 1 से लेकर 6 और 10**) मत्ती अध्याय 18 **वचन** 1 **से लेकर** 6 में, यीशु अपने शिष्यों को विनम्रता और बच्चों जैसे विश्वास के महत्व के बारे में सिखाते हैं। वह उनके सामने एक बच्चे को रखते हैं और कहते हैं, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।" वह उन छोटों में से किसी को भी ठोकर खिलाए जाने के लिए, जो उस पर विश्वास करते हैं, उनके विश्वास के कीमत पर जोर देते हुए चेतावनी देता है। इस अनुच्छेद में यीशु की शिक्षा परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में विनम्रता और सरल, भरोसे से भरे हुए विश्वास के महत्व को रेखांकित करती है। जिस तरह बच्चे स्वाभाविक रूप से अपने माता-पिता पर भरोसा करते हैं और उन पर निर्भर होते हैं, ठीक उसी तरह हमें अपने स्वर्गीय पिता पर भरोसा करने और उस पर निर्भर रहने के लिए कहा गया है। बच्चों जैसा यह विश्वास सच्ची स्तुति के लिए आवश्यक है, क्योंकि यह एक ऐसे मन को दर्शाता है, जो खुला, ईमानदार और पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर है। इसके अलावा, यीशु ने उल्लेख किया है कि इन छोटे बालकों के दूत स्वर्गीय पिता का मुँह सदा देखते हैं (मत्ती अध्याय **18** वचन **10**)। यह कथन स्वर्गदूतों और विश्वासियों के बीच घनिष्ठ संबंध को उजागर करता है, खासकर उन लोगों के बीच जो अपने विश्वास में विनम्र और बच्चों जैसे हैं। जब हम नम्र हृदय से परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तो हम स्वर्गदूतों के साथ उनकी आराधना में शामिल होते हैं, और हमारी स्तुति परमेश्वर को एक शुद्ध और मनभावनी भेंट बन जाती है।

इस सन्देश का सार: जब हम "स्वर्ग की सारी सेनाओं के साथ मिलकर परमेश्वर की स्तुति" पर इस मनन को समाप्त करते हैं, तो हमें याद दिलाया जाता है कि हमारी स्तुति आराधना का एक शक्तिशाली, शाश्वत और विजयी कार्य है। स्तुति के माध्यम से ही हम आत्मिक युद्ध में शामिल होते हैं, स्वयं को परमेश्वर के उद्देश्यों के साथ जोड़ते हैं, और उसके नाम की महिमा करने में स्वर्गीय प्राणियों के साथ जुड़ते हैं। हमारी स्तुति हमारे विश्वास की अभिव्यक्ति भी है, एक ऐसा विश्वास जो विनम्र, बच्चों जैसा और पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर है। आइए हम, परमेश्वर की प्रजा के रूप में, उसकी स्तुति करने में परिश्रमी यह पहचानते हुए बनें कि हम इस आराधना के कार्य में अकेले नहीं हैं। हम एक विशाल, स्वर्गीय गायन मंडली का हिस्सा हैं, जो लगातार हमारे सृष्टिकर्ता, मुक्तिदाता और पालनहार की स्तुति गाती है। आइए हम स्वर्गदूतों और सारी सृष्टि के साथ मिलकर अपनी आवाज उठाए, और परमेश्वर की महिमा और उसके राज्य की जीत की घोषणा करें।

आइए हम प्रार्थना करें: हे स्वर्गीय पिता, हम आपके पवित्र नाम की स्तुति करने में स्वर्ग की सेना के साथ शामिल होने के सौभाग्य के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। हम आपकी महानता, भलाई और महिमा से चिकित हैं। अपने राज्य की अनदेखी वास्तविकताओं को देखने के लिए हमारी आँखें खोलें और आपकी प्रभुता से भरी इच्छा पर भरोसा करने के लिए हमारे विश्वास को मजबूत करें। हमें सभी परिस्थितियों में आपकी स्तुति करने में मदद यह जानते हुए करें कि हमारी स्तुति एक महान, शाश्वत गान का हिस्सा है। हमारा हृदय विनम्र और बच्चों जैसा हो, जो कि पूरी तरह आप पर निर्भर हो, और हमारा जीवन आपके प्रेम और अनुग्रह का प्रतिबिम्ब हो। जब हम अपने विश्वास की यात्रा जारी रखते हैं, तो हमें सांत्वना और प्रोत्साहन दें, और हमारी स्तुति के द्वारा आपके नाम को सम्मान दिलाए। यीशु के नाम में, हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।